देश बर्बाद हो जाए, भाजपा की ताकत कम नहीं होने वाली

डॉ. सलमान अरशद

कोरोना के कारण लोग मरें या देश बर्बाद हो जाये, सत्ताधारी दल की ताकत कम नहीं होने वाली, जिन्हें ये गुमान है वो अपने विचार पर पुनर्विचार करें !

1857 के बाद से लगातार हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच नफरत को बढ़ाने पर सरकारी संरक्षण में योजनाबद्ध रूप से काम किया गया। देशी विदेशी विद्वानों को प्रोजेक्ट दिए गए और उन्होंने भारत के इतिहास में हिन्दू बनाम मुस्लिम एंगल बड़े ही बारीकी से डाले। 1925 में आरएसएस के बनने के बाद इस काम को और बल मिला। इस न ?रत की सियासत को आधार बनाकर देश के 3 टुकड़े हुए।

आजाद भारत में भी नफरत की ये खेती जारी रही और कांग्रेस का भी कभी खुलकर तो कभी छुपकर इसे समर्थन मिलता रहा। जनता में ये नफरत जैसे जैसे पैठ बनाती गई वैसे वैसे नफरत के सौदागर भी खुल कर खेलने लगे।

अभी 10 साल पहले दंगाई मानसिकता के लोग अपनी नफरत का इजहार वैसे नहीं कर पाते थे, जैसे आज कर पा रहे हैं। आप किसी मुसलमान या दलित को पीट कर, उसकी हत्या कर या बलात्कार कर बच सकते हैं, देश का कानून आपके लुए पंगु बना दिया जाएगा, ये विश्वास अभी 10 साल पहले तक नहीं था।

आज जब कोरोना के कारण अस्पताल में जगह नहीं है, शमशान भरे पड़े हैं, दवाइयों और ऑक्सीजन की कालाबाजारी जोरों पर है और शासन प्रशासन नाम की चिड़िया गायब है, ऐसे में बहुत से लोगों को लग रहा है कि सत्ताधारी दल का आधार घटेगा और जनता वक्त आने पर इनसे अपना हिसाब चुकता करेगी। लेकिन सत्ता समर्थकों के लेख, उनकी पोस्ट, उनके कुतर्क पढिये तो कहीं से भी नहीं लगता कि ऐसा होगा। दरअसल नफरत की सियासत सबसे पहले उन मूल्यों पर हमला करती है जिनके कारण आप इन्सान कहलाते हैं। जैसे परस्पर प्रेम और सहयोग। नफरत की सियासत आपसे आपकी संवेदनशीलता छीन लेती है। फिर ऐसा व्यक्ति 8 साल की बच्ची से कई कई रोज बलात्कार कर सकता है क्योंकि वो मुसलमान के घर में पैदा हुई है, सत्ताधारी दल ऐसे अपराधियों के समर्थन में रैली निकाल सकता है क्योंकि उन्हें पता है कि देश में ऐसे लोग हैं जिन्हें इनका ये अपराध भी पसंद आएगा, फिर ऐसा व्यक्ति एक हत्यारे को अपना आदर्श चुन सकता है। मैं इस संकट की घड़ी में भी जब ऐसे लोगों के कुतर्क को पढ़ता या सुनता हूँ तो मुझे आश्चर्य नहीं होता।

भारत की सभी संसदीय पार्टियाँ नफरत की इस सियासत से सीधे टकराने से बचती हैं, उनको लगता है कि इससे बहुसंख्यक वोट कम हो जाएगा। इसका मतलब हुआ कि वो मानते हैं कि बहुसंख्यक जनता मुसलमान से नफरत करती है। अब इस नफरत की सियासत का सबसे बड़ा ब्रांड मौजूद है, बावजूद इसके अधकचरे ब्रांड इस बड़े ब्रांड से मुकाबला कर रहे हैं। कोई परसुराम की मूर्ति बनवा रहा है तो कोई कुछ और।

किसान आंदोलन हो या किसी संसदीय पार्टी का सत्ता के लिए संघर्ष, जब तक मुसलमानों के प्रति देश की नशों में घोले गए इस नफरत को सीधे टारगेट नहीं किया जाता, आरएसएस को आप सत्ता से बाहर नहीं कर पाएंगे।

अब यहाँ कुछ और बातों पर गौर करना जरूरी है। आरएसएस असमानता को नैसर्गिक मानती है। समानता, स्वतंत्रता और भातृत्व में उसका कोई यकीन नहीं है। भारतीय दर्शन की विकासवादी धारा भी इसे समर्थन करती है, जो मानती है कि सत्व, रज और तम के आसमान मिश्रण से सृष्टि की रचना हुई है। जाहिर सी बात है, आरएसएस से आप समानता और न्याय की उम्मीद नहीं कर सकते।

भारत की जाति व्यवस्था जिसे देश के करीब करीब सभी लोग मानते हैं और जीवन में लागू भी करते हैं, दुनिया की सबसे निकृष्ट नस्लीय भेदभाव की व्यवस्था है, इस व्यवस्था पर कहीं से कोई भी खुल कर हमला नहीं कर रहा है। यहाँ तक कि वामपंथी भी जातिआधारित सड़ांध में आकंठ डूबे हुए हैं। जातिआधारित सियासत को बचाये रखना भी आरएसएस की एक कोशिश है, अगर आप भी इस व्यवस्था को बनाये रखना चाहते हैं तो आप आरएसएस के साथ हैं।

अंत में, अगर आप भाग्यवादी हैं, अगर आप पूर्वजन्म के कर्मों में विश्वास करते हैं, अगर आप असमानता के नैसर्गिक सिद्धांत में विश्वास करते हैं, अगर आप जाति व्यवस्था में विश्वास करते हैं, अगर आप जाति के आधार पर किसी मानव समूह से नफरत करते हैं और अगर आप मुसलमानों से नफरत करते हैं, तो आज भले ही आपके आँगन में लाश पड़ी हो, भले ही आपने अपने प्यारों को खो दिया हो, कल आप आरएसएस के साथ खड़े मिलेंगे।

आज की तारीख में मुसलमानों के प्रति नफरत ही आरएसएस की ताकत है, आप खुद को इस नफरत से मुक्त कर लें, ये खत्म हो जाएंगे। लेकिन मैं जानता हूँ ये बहुत कठिन है। इसकी दो वजह है, एक तो सभी मौजूदा संसदीय पार्टियाँ जाति और धर्म की ही राजनीति कर रही हैं, दूसरा, मीडिया के जरिए जिस योजनाबद्ध तरीके से आपके मानस पर हमला किया जा रहा है, उसका मुकाबला करना आम देशवासी के लिए आसान नहीं है। यही कारण है कि जब देशवासी बेरोजगारी और बीमारी से लड़ रहे हैं, तब सत्ता में बैठे लोग बेखौफ अपनी मर्जी मुताबिक जो ठीक लग रहा है, कर रहे हैं, उन्हें आपकी फिक्र नहीं है। उन्हें मालूम है कि एक वोटर के रूप में आप उनके मकड़जाल से बाहर कभी भी नहीं जाएंगे।

तो फिर उपाय क्या है ?

इस सवाल का जवाब आप लिखिये।

देश के इस मेडिकल ढाँचे को किसने तोड़ा, बर्बाद किया

धीरेश सैनी

क्या होता है अस्पताल? किसी चारदीवारी में पलंग डलवाकर उन पर चादर-तकिये रखवा फ़ोटो जारी कर देना? अस्पताल पर्याप्त योग्य डॉक्टरों, नर्सिंग स्टाफ और इलाज व जाँच की मशीनों, दवाओं और सपोर्ट सिस्टम से बनता है।

हालत यह है बड़े-बड़े सरकारी अस्पतालों में कब से भर्तियां नहीं की गईं, मशीनें नहीं खरीदीं गईं और बहुत जगह तो नर्सिंग स्टाफ को तनख्वाहें तक नहीं दी गईं।

आम लोगों की पहुँच वाला सरकारी मेडिकल ढाँचा तोड़ दिया गया। मध्य वर्ग को लगा कि वह चमक-दमक वाले अस्पतालों में जाकर लेट सकता है। उसने मनुष्य के जीवन से जुड़ी मूलभूत ज़रूरतों को पूँजीवादी आदमखोरों के कब्जे में जाने से रोकने की कोशिशों में साथ देने के बजाय इसका विरोध किया। पूँजीवाद इस मामले में सेकुलर है। ज़रा सा मौक़ा हाथ लगे तो संकट को विकराल दिखाकर वह अपने इन हिमायतियों का भी खून चूसती है।

यही हो रहा है, मल्टी नैशनल कम्पनियों से मोटा पैसा कमा चुके लोग भी अस्पताल के बेड के बिना मरने को मज़बूर हैं। मध्य वर्ग की हालत तो पूछिए ही मत। इस शोर में ग़रीबों की कोई ज़िक्र-फ़िक्र नहीं।

ये वही लोग हैं जिन्होंने नफ़रत के वॉट्सएप बढ़ाए, नरसंहारों का समर्थन किया, मोदी-मोदी किया और ख़ुद को चौकीदार बताया। वो चौकीदारी कहाँ हैं? दवाओं और ऑक्सीजन सिलेंडर पर खुली कालाबाज़ारी का रोना इन लोगों के गुहार और निराशा से भरे स्टेटस से ही पता चल रहा है।

मोदी के प्रधानमंत्री बनते ही सबसे पहला अभियान यही चलाया गया था कि करप्शन ऊपर से नीचे तक एकदम ख़त्म हो गया है। और इधर राफेल तक गुज़र गया। आज हालत यह है कि कई लोग जो कल तक घृणा के ट्वीट करते थे, आज बेबसी, असहायता और अराजकता की शिकायत करते हुए अपने नेताओं से गुहार लगाते हुए चले गए या उनका कोई परिजन चला गया। अब उनके पुराने और ये नए ट्वीट वायरल हो रहे हैं?

सवाल यही है कि क्या आपने इतने भयानक समय में ऐसी अव्यवस्था, ऐसी खुली कालाबाज़ारी और सरकार का ऐसा मुँह फेरे रखना पहले कभी देखा? आपने नेता के एक साल के और इन् महीने-दो महीनों के, ठीक इस वक़्त के आयोजनों को देखा-समझा है? लेकिन, आप लोगों ने यही सीखा है, मरते रहें, मारते रहें और सही सवाल उठाने वालों को, आंदोलनकारियों को देशद्रोही, षड्यंत्रकारी बताते रहें।

बिहार के एक एमएलए मनोज मंज़िल की तस्वीर देखी। अस्पताल के बाहर बैठे रहे ताकि व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे। सरकारी ढाँचा मज़बूत हो और सच्चा नेता अपनी ज़िंदगी की परवाह किए बिना, किसी तामझाम के बिना अस्पताल-अस्पताल निकले, हौसला दे, कालाबाज़ारी रोके तो ऐसा नहीं कि डॉक्टर और जनता से ही लोग मदद के लिए अपनी जान न लड़ा दें। वरना तो आपको यह भी याद होगा कि कैसे एक फ़र्ज़ी अस्पताल बनाकर उसके निरीक्षण की शूटिंग मीडिया में वायरल कर दी गई थी।

इंसानियत अजीब शै है, हैवानियत में भी बदल जाती है और अपने सुंदरतम रूप में भी आ जाती है। बात यह होती है कि इंसान को ले जाया किस तरफ़ जा रहा होता है। आप देख रहे हैं जब संक्रमण के डर से रिश्तेदार अपने लोगों को छोड़ दे रहे हैं, तब वे मुसलमान युवक मदद के लिए, शवों को कंधा देने के लिए, खून देने के लिए आगे आ जाते हैं जिन्हें लगातार ज़िल्लत और आतंक दिया जाता रहा।

चाहें तो यह ध्यान रखिए, जिस पूँजीवादी ढाँचे को खड़ा किया जा रहा है, जिसे न्यू वर्ल्ड ऑर्डर का नाम दिया गया है, उसमें इंसानों को इसी तरह मक्खियों-मच्छरों की तरह भुनना है। आपके बीच से जाति और धर्म के हिसाब से दलाल खड़े किए जाते रहेंगे, उन्हें लूट से छोटा-मोटा टुकड़ा दिया जाता रहेगा और वे आपको इसी तरह मरना और हत्यारों का गुणगान करता सिखाते रहेंगे।

पीएम केयर्स फंड के वेंटिलेटर खरीदी की असलियत जान लीजिए

गिरीश मालवीय

आज देशभर के अस्पतालों में सबसे अधिक वेंटिलेटर बेड की कमी है इसलिए यह जान लेना समीचीन है कि क्क्रू केयर फंड से जो वेंटिलेटर खरीदे गए थे उनका क्या हुआ !......

पीएमओ ने 13 मई 2020 को 3100 करोड़ रुपए के खर्च की जानकारी दी थी। उसके अनुसार, 2 हजार करोड़ रुपए से 50 हजार मेड इन इंडिया वेंटिलेटर खरीदने की बात हुई। उस वक्त देश में सबसे ज्यादा वेंटिलेटर की कमी थी। .....

पीएम केयर फंड से ऐसी कम्पनियो को ठेका दिया गया जिन्होंने खराब माल बनाया उसके वेंटिलेटर किसी भी काम के नही थे ......यह रिपोर्ट देश के स्वास्थ्य मंत्रालय ने दी लेकिन तब भी समय रहते न कोई कार्यवाही नही की गयी ओर न ही दूसरा इंतजाम किया गया, नतीजा आज हम भुगत रहे हैं

ऐसी कम्पनी को ठेका दिया गया जिसे कोई अनुभव ही नही था ऐसे लोगो को पीएम केयरर्स फंड के पैसे पर वेंटिलेटर्स बनाने का कॉण्ट्रैक्ट दिया गया जो बीजेपी नेताओं के करीबी थे। गुजरात की एक कम्पनी ज्योति सीएनसी को वेंटिलेटर बनाने का ठेका दिया गया...... जबकि आप नाम से ही समझ लीजिए कि यह क्या कम्पनी होगी, ज्योति सीएनसी को 121 करोड़ में 5000 वेंटिलेटर बनाने का ठेका दिया गया था,

इस फर्म की तरफ से बनाए गए धमण 1 वेंटिलेटर्स में कई कमियां थीं और इनकी आलोचना भी हुई थी. इसने जो वेंटिलेटर बनाए उसके वेंटिलेटर्स को अहमदाबाद सिविल अस्पताल ने ही नकार दिया उन्होंने कहा कि इस से गंभीर मरीजों को कोई राहत नही दी जा सकती

अगस्त 2020 में एक आरटीआई के जवाब में हेल्थ मिनिस्ट्री ने बताया कि आंध्र सरकार की कंपनी ्स्र्ञ्ज और गुजरात की निजी कंपनी ज्योति ष्टह्ष्ट के बनाए वेंटिलेटर्स क्लिनिकल ट्रायल में फेल हो गए हैं।

बाद में अखबारों में भी आया कि ज्योति सीएनसी कंपनी के प्रमोटर भाजपा के नेताओं के करीबी हैं. कंपनी के प्रमोटर्स उसी उद्योगपति परिवार से जुड़े हैं, जिन्होंने साल 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उनका नाम लिखा सूट तोहफे में दिया था. मई महीने में कुल मिलाकर 22.5 करोड़ रुपए की एडवांस पेमेंट मिली. जो पीएम केयर्स के पैसे से आवंटित किये गए

सिर्फ यही नही पीएम केयर्स फंड से नोएडा की AgVa को 10,000 वेंटिलेटर बनाने का कॉण्ट्रैक्ट दिया गया बाद में खबर आई कि इस कम्पनी के बनाए गए वेंटिलेटर लगातार दो क्लिनिकल ट्रायल में फेल हो गए हैं, सरकार की क्लिनिकल इवैल्युएशन कमिटी ने कहा था कि इन्हें हाई एंड वेंटिलेटर का विकल्प माना जाए. इस सस्ते वेंटिलेटर्स को लेकर कई शिकायतें हैं, लेकिन उसके बावजूद उसे लिस्ट से हटाया नही गया कम्पनी ने वेंटिलेटर बनाना जारी रखा हाल ही में AgVa के सीईओ दिवाकर वैश ने कहा था, 'सरकार के ऑर्डर पर हमने 10 हजार वेंटिलेटर बना दिए हैं। लेकिन एक साल बाद भी सरकार पांच हजार डिवाइस ही उठा पाई है। पांच हजार अब भी हमारे गोदाम में पड़े हैं।'

इसी तरह से बाकी जिन कम्पनियो ने वेंटिलेटर बनाए वो ऐसी ही गड़बड़ियों के कारण रखे रह गए और जो अस्पतालों तक पुहंचे वो किसी काम के नही निकले,

राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री ने हाल ही में कहा था कि केंद्र सरकार की ओर से राज्य को 1000 वेंटिलेटर भेजे गए थे, लेकिन इन्होंने दो-ढाई घंटे बाद ही काम करना बंद कर दिया। इसी तरह छत्तीसगढ़ में 69 में से 58 वेंटिलेटर खराब होने की बात सामने आई है।

एक ओर बात है...... वेंटिलेटर दरअसल अत्याधुनिक मशीन होती है इन मशीनों के इंस्टालेशन की जिम्मेदारी वेंटिलेटर निर्माता की ही होती है इन्हें चलाने के लिए अस्पताल के कर्मचारियों को ट्रेनिंग देने की भी आवश्यकता होती है, वेंटिलेटर कोई भी नहीं चला सकता। यह ट्रेनिंग दिलवाने की जिम्मेदारी भी वेंटिलेटर निर्माता कम्पनी की है क्योंकि उसने इन नए वेंटिलेटर में क्या तकनीक इस्तेमाल की है वही सबसे बेहतर बता सकता है

अब ऐसी कम्पनियो को ठेके देंगे तो वो लोग क्या इंस्टालेशन, ट्रेनिंग ओर आफ्टर सेल्स सर्विस की गारण्टी लेंगे आप खुद सोचिए......